Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 02, (जुलाई, 2024)
पृष्ठ संख्या 46–49

भारतीय कृषि का विविधीकरण

केशरीनाथ त्रिपाठी[1], संजीव पाण्डेय[1], विकास मिश्रा[2] एवं कृष्णचंद्र तिवारी[3]

[1]सहायक प्राध्यापक,
एल एन सी टी विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश –462042
[2]सहायक प्राध्यापक,
महर्षि उत्तम सामाजिक विज्ञान केंद्र सलकनपुर सीहोर, मध्य प्रदेश
[3]सहायक प्राध्यापक,
बीपीएस कॉलेज बाकलपुर आगरा उत्तर प्रदेश, 283125, भारत।

Email Id: – keshrinath.tripathi@gmail.com

कृषि विविधीकरण का अर्थ है विभिन्न फसलों की खेती, पशु नस्लों को पालनऔरअन्य घटकों जैसे कि मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन, मत्स्य पालनआदि, जिन्हें किसी दिए गए खेत या कृषक समुदाय में जोड़ा जाता है।

कृषि में विविधीकरणआज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है।क्योंकि दिन प्रति दिन जनसंख्या की खाद्यान्न और अन्य कृषि उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है, इस लिए इस स्थिति में किसानों को पारंपरिक कृषि से आधुनिक कृषि में स्थानांतरित करके एकगतिशीलऔर व्यावसायिक क्षेत्र में बदलने की आवश्यकता है।

कृषि का विविधीकरण आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपयुक्त कृषि जलवायु क्षेत्रों के अनुसार किसानों के द्वारा विभिन्न फसल पैटर्नऔर विविधीकरण का पालन किया जाता है। इसके लिए कृषि विविधीकरण को प्रौद्योगिकी या उपभोक्ता मांग, व्यापार या सरकारी नीति में परिवर्तन, तथा परिवहन, सिंचाई और बुनियादी ढांचे के अन्य आधार पर अपना चाहिए।

विविधीकरण की अनिवार्यताः–

ये निम्नलिखित हैं:

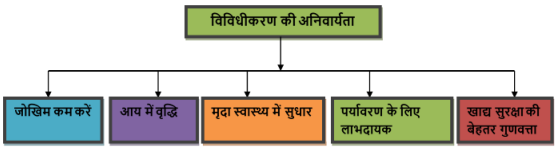

1. जोखिम कम करें:– कृषि विविधीकरण कई फसलों और पशुधन में निवेश और उत्पादन को फैलाकर खेती से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करताहै। क्योंकि इससे फसल खराब होने या पशुधन की बीमारी से पूरे खेत कीआय खत्म होने की संभावना कम हो जाती है। छोटे पैमाने के किसानों के लिए जिनके पास बीमा या अन्य जोखिम कम करने वाले उपायों तक पहुंच नहीं हो सकती है, विविधीकरण उनकी आजीविका की रक्षा करने का एक प्रभावी तरीका हो सकता है।अपने खेतों में विविधता लाकर, छोटे पैमाने के किसान मौसम, कीटों या बीमारी के कारण पूरी फसल खराब होने के जोखिम को कम कर सकते हैं, जो एक ही

फसल या उत्पाद पर निर्भर रहने वाले किसानों के लिए विनाशकारी हो सकता है।

2. आय में वृद्धिः– विविधीकरण किसानों को बाजार के अवसरों का लाभ उठाने और बदलती उपभोक्ता मांग का जवाब देने की अनुमति देता है। कृषि विविधीकरण छोटे पैमाने के किसानों को उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला बेचने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनकी आय के स्रोत बढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी विशेष मौसम में किसी विशेष फसल की मांग कम है, तो छोटे पैमाने के किसान जिन्होंने अपनी फसलों में विविधता लाई है, वे अभी भी अन्य फसलों से आय उत्पन्न कर सकतेहैं जिनकी मांग अधिक हो सकती है। विविधीकरण छोटे पैमाने के किसानों को मूल्य–वर्धित उत्पाद, जैसे प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ या विशेष उत्पाद, जो उच्च कीमतों पर मिलते हैं, बेचने में सक्षम बनाकर लाभ प्रदता बढ़ाने में भी मदद कर सकता है।

3. मृदा स्वास्थ्य में सुधारः– फसल चक्रण, जो कृषि विविधी करण का एक अनिवार्य घटक है, मिट्टी के कटाव को कम करके, मिट्टी की संरचना में सुधार करके और मिट्टी के पोषक तत्वों की कमी को रोककर मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। फसल चक्रण मिट्टी में कीटों और बीमारियों के निर्माण को कम करने में भी मदद करता है, जिससे कीटनाशकों और अन्य रसायनों की आवश्यकता कम हो जाती है। फसलों को घुमाकर, छोटे पैमाने के किसान मिट्टी के क्षरण को कम कर सकते हैं और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रख सकते हैं, जो टिकाऊ कृषि के लिए आवश्यक है।

4. पर्यावरण के लिए लाभदायकः– छोटे पैमाने के किसान जिन्होंने अपने खेतों में विविधतालाई है, वे फसलों और पशुओं की एक विस्तृत श्रृंखला उगाकर जैवविविधता को संरक्षित करने में मददकर सकते हैं। विविधीकरण जैवविविधता को बढ़ावा देता है द्य जिसे कीट और रोगप्रकोप के जोखिम को कम करता है, जिससे कीटनाशकों और अन्य रसायनों कीआवश्यकता कम हो जाती है। इससे पर्यावरण पर खेती का प्रभाव कम होता है। कीटनाशकों और अन्य रसायनों के उपयोग को कम करके, वे खेती के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में भी मदद कर सकते हैं।

5. खाद्य सुरक्षा की बेहतर गुणवत्ता :– विविधीकरण पूरे वर्ष भोजन की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करता है, जिससे फसल खराब होने के समय भोजन की कमी का जोखिम कम हो जाता है। छोटे पैमाने के किसान जिन्होंने अपने खेतों में विविधता लाई है, वे सूखे, बाढ़या अन्य पर्यावरणीयआपदाओं के समय भी अपने परिवारों और समुदायोंके लिए भोजन की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित कर सकते हैं। विविधीकरण किसानों को फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला उगाने में भी सक्षम बनाता है, जो उनके द्वारा उत्पादित भोजन की पोषण गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

विविधीकरण के प्रकार

1. फसल उत्पादन का विविधीकरणः– विविधीकरण मुख्य रूप से खाद्यान्नों से नकदी फसलों की ओर फसल पैटर्न को स्थानांतरित करने पर केंद्रित है। फसल उत्पादन के विविधीकरण का मूल उद्देश्य निर्वाह खेती से वाणिज्यिक खेती की ओर बदलाव को बढ़ावा देना है। सरल शब्दों में, इसका अर्थ है भारत में फसल प्रणाली को एकल–फसल प्रणाली से बहु–फसल प्रणाली में स्थानांतरित करना। कृषि क्षेत्र में अभी भी निर्वाह खेती का प्रभुत्व है और

फसल प्रणाली के लिएय किसान चावल, गेहूं, मक्का आदि जैसे अनाजों को अधिक महत्व देते हैं। इसलिए इसका मुख्य उद्देश्य फसल पैटर्न में बदलाव का प्रतिनिधित्व करना है, जिसका तात्पर्य विभिन्न फसल उत्पादन के लिए प्रतिबद्ध क्षेत्र के अनुपात में बदलाव है।

2. उत्पादक गतिविधियों का विविधीकरणः– समय की मांग के अनुसार श्रमिकों को उत्पादन के विभिन्न चौनलों की ओर स्थानांतरित करके विविधीकरण किया जाए। इसे श्रमिकों को कृषि से संबंधित गतिविधियों या गैर–कृषि गतिविधियों की ओर निर्देशित करके पूरा किया जा सकता है। गैर–कृषि गतिविधियों में रोजगार किसानों को स्थायी आजीविका के वैकल्पिक रास्ते प्रदान करने और उनकी आय के स्तर को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

गैर–कृषि गतिविधियों के विभिन्न खंड। इनमें से कुछ खंडों में गतिशील संबंध हैं जो स्वस्थ विकास को संभव बनाते हैं, जबकि अन्य खंड निर्वाह और कम उत्पादकता वाले हैं।

अन्य कुछ गतिशील उप–क्षेत्रों में कृषि प्रसंस्करण उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, पर्यटन आदि शामिल हैं। इसके अलावा, जिन क्षेत्रों में क्षमता है लेकिन बुनियादी ढांचे और उचित समर्थन का अभाव है, उनमें पारंपरिक घरेलू–आधारित उद्योग जैसे शिल्प, मिट्टी के बर्तन, हथकरघा आदि शामिल हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में गैर–कृषि रोजगार का महत्वः–

ये निम्नलिखित हैं।

1. **पशुधनः–** पशुधन घटक ग्रामीण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसमें मुख्य रूप से चरागाह पशुओं को भोजन या कच्चे माल के रूप में पालना, पालना और पोषण करना शामिल है, जैसे कि मांस, दूध, ऊन, त्वचा, आदि, जिनका व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह 70 मिलियन से अधिक ग्रामीण किसानों को आजीविका प्रदान करता है। पशुधन का उपयोग किसान खेत में परिवहन और कृषि इनपुट ले जाने के लिए एक साधन के रूप में भी करते हैं, और गाय जैसे जानवरों का उपयोग पारंपरिक जुताई विधियों के लिए खेत में किया जाता है।
2. **बागवानी** :– बागवानी घटक का तात्पर्य फल, फूल, सब्जियाँ आदि जैसे उद्यान फसलों की खेती से है। भारत दुनिया भर में केले, आम, गन्ना आदि जैसे विभिन्न फलों का एक महत्वपूर्ण निर्यातक है। यह क्षेत्र देश के लगभग 19% कार्यबल को रोजगार देता है।
3. **मछली पालन** – इस घटक में मछलियों, झींगों, सीपों, केकड़ों और अन्य समुद्री और मीठे पानी की मछलियों को पकड़ना, छांटना, बेचना और वितरित करना शामिल है। ओडिशा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और केरल जैसे तटीय राज्य देश भर में मछलियों की आपूर्ति करने और अन्य देशों को निर्यात करने वाले प्रमुख क्षेत्र हैं। मत्स्य पालन क्षेत्र का भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में 1.9ः हिस्सा है। इस क्षेत्र में ज्यादातर महिलाएँ कार्यरत हैंय इस क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की गुंजाइश प्रमुख है।
4. **डेयरी उत्पादः–** इस क्षेत्र में दूध उत्पादन के लिए गाय, बकरी, भैंस और भेड़ जैसे मवेशियों को पाला जाता है। इस उद्योग में दूध और उसके उप–उत्पादों जैसे मक्खन, कच्चे दूध का पाउडर, घी, पनीर आदि को

इकट्ठा करना, संरक्षित करना और वितरित करना शामिल है।

5. **सूचान प्रौद्योगिकीः** – सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ है, अन्य कार्यों के अलावा डेटा के भंडारण, पुनर्प्राप्ति, संचरण और हेरफेर के लिए अन्य दूरसंचार उपकरणों और उपकरणों के साथ–साथ कंप्यूटर का उपयोग करना, जो विभिन्न क्षेत्रों की दक्षता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आईटी प्रौद्योगिकी का उपयोग कृषि में भी किया जाता है। विविधीकरण के दृष्टिकोण से कृषि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

- यह किसानों को कृषि–जलवायु क्षेत्र के अनुसार फसलों, बीज किस्मों का बेहतर चयन करने में मदद करता है और मौसम की स्थिति के अनुसार बेहतर फसल पैटर्न और प्रणाली का चयन करने में भी मदद करता है जो उच्चतम लाभ प्राप्त करने के लिए इष्टतम कृषि विज्ञान गतिविधि के लिए बहुत आवश्यक है।
- यह किसानों को उर्वरकों के प्रकार, स्थलाकृति के अनुसार बुवाई की विधि, अपनी उपज का विपणन कब करना है और सर्वोत्तम कृषि तकनीकों को कैसे अपनाना है, के बारे में सही निर्णय लेने में मदद करता है।
- फसल डेटा, पशु डेटा या किसी भी अन्य कृषि डेटा को सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग और फिर आसानी से मैन्युअल प्रक्रियाओं के साथ सहेजा और रखा जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी स्वचालित रूप से कृषि मशीनों का उपयोग करने में भी मदद करती है जो किसान की अनुपस्थिति में भी सिंचाई गतिविधियों या छिड़काव कार्यक्रम जैसी गतिविधियों को करने के लिए निर्धारित होती हैं जो बहुत समय की बचत, लागत प्रभावी और कृषि में हर इनपुट का अत्यधिक कुशलतापूर्वक उपयोग करती है।
- यह प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और मृदा अपरदन को नियंत्रित करने में भी मदद करता है।

कृषि में विविधीकरण के लाभः–

ये निम्नलिखित हैं।

1. कृषि में विविधीकरण अपनाने से छोटे भूमिधारक किसानों की वार्षिक आय बढ़ाने में मदद मिलेगी।
2. किसानों को विभिन्न कृषि उत्पादों के लिए अच्छे मूल्य मिलते हैं।
3. कृषि विविधीकरण से जलवायु परिवर्तनशीलता को आसानी से संतुलित किया जा सकता है।
4. आजकल जनसंख्या वृद्धि के कारण विभिन्न कृषि उत्पादों की मांग बढ़ रही है, इसलिए इस स्थिति में कृषि का विविधीकरण जनसंख्या भोजन और अन्य कृषि उत्पाद मांगों को संतुलित करने में मदद करता है।
5. यह अच्छी गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने के लिए खाद्यान्न, चारा और अन्य उपोत्पादों के पोषण मूल्य को संतुलित करने में भी मदद करता है।
6. कृषि विविधीकरण की सहायता से हम विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों जैसे मिट्टी, जल, जैव विविधता आदि का संरक्षण एवं टिकाऊ प्रबंधन आसानी से कर सकते हैं।